Civilization

Ms. Rekha Kumari
Assistant Professor
Department of Sanskrit
Shivaji College

सभ्यता

- संस्कृति शब्द के साथ प्रायः एक और शब्द- 'सभ्यता' का भी प्रयोग प्राप्त होता है।
- सभा में बैठने की योग्यता(सभायाम् अर्हति इति= सभा+यत्= सभ्यः) (सभ्य+तल्+टाप्= सभ्यता)।
- इस दृष्टि से सभ्यता शब्द का प्रधान अर्थ सामाजिकता है।
- सभ्यता सामाजिक प्रतिबन्धों(विधि निषेधों) तथा कर्तव्यों पर बल देती है।
- सभ्यता का सम्बन्ध मूर्त एवं भौतिक पदार्थों से है जो हमें उत्तराधिकार में भले ही प्राप्त नहीं हो, अपनी आवश्यकता के अनुसार हम इनका निर्माण कर लेते हैं।

- अतः सभ्यता के द्वारा मनुष्य की भौतिक सुख समृद्धि तथा तदन्तर्गत व्यवहार का परिज्ञान होता है।
- इसी आधार पर जो राष्ट्र भौतिक दृष्टि से अधिक प्रगतिशील हैं, वे स्वयं को दूसरे राष्ट्रों की अपेक्षा अधिक सभ्य मानते हैं।

संस्कृति एवं सभ्यता में अंतर

- इन दोनों शब्दों की व्युत्पत्ति नितान्त भिन्न होने के कारण इनका शब्दार्थ भी भिन्न-भिन्न है।
- संस्कृति आंतरिक उन्नति है और सभ्यता से बाह्य(भौतिक) उन्नति सूचित होती है। यही कारण है कि संस्कृति का अनुकरण नहीं किया जा सकता है। उसे अपनाना होता है। किन्तु सभ्यता का अनुकरण सरलता से किया जा सकता है।

- संस्कृति को माप सकने का कोई भी मानदण्ड नहीं है किन्तु सभ्यता को मापने का मानदण्ड उपयोगिता है।
- संस्कृति विकसित नही होती किन्तु सभ्यता का निश्चय ही विकास होता है।

निष्कर्ष

- संस्कृति एवं सभ्यता को एक-दूसरे से पृथक नही किया जा सकता है जैसे व्यक्ति और समाज अलग-अलग होकर भी एक-दूसरे से जुड़े हुये हैं, एक-दूसरे के पूरक हैं वही स्थिति संस्कृति और सभ्यता की है।
- सभ्यता से यदि व्यक्ति के शारीरिक और भौतिक विकास की सूचना मिलती है, तो संस्कृति शब्द बौद्धिक और मानसिक प्रगति को परिलक्षित कराता है।